इस्लाम में औरत का पसन्दीदा किरदार

सै० असद गीलानी

अनुवाद :
डॉ. रफ़ीक़ अहमद

किताब का नाम	:	इस्लाम में औरत का पसन्दीदा किरदार
लेखक	:	सै० असद गीलानी
हिन्दी अनुवाद	:	डा० रफ़ीक़ अहमद (पी एच०डी०) प्रवक्ता मुस्लिम इण्टर कालेज फ़तेहपुर
हिन्दी एडीशन	:	2010
प्रतियाँ	:	1000
पृष्ठ	:	18
कम्पोज़िंग	:	शाहनवाज़
प्रिन्टर्स	:	रहमान प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स आबूनगर–फ़तेहपुर

मिनजानिब

ख़िज़रा लाइब्रेरी

(इस्लामी किताबों का मर्कज़)

सय्यदवाड़ा, फ़तेहपुर

ज़ेरे निगरानी : जमाअते इस्लामी हिन्द, फ़तेहपुर

بسم الله الرحمن الرحيم

औरतों के लिये इस्लाम ने जिस किरदार और चरित्र की तस्वीर अपनी शिक्षाओं में पेश की है, उनके लिये जिस तरह का पसन्दीदा किरदार अल्लाह की किताब में बताया गया है और जिस प्रकार का किरदार हुज़ूर सल्ल० ने उस वक़्त इस्लामी समाज में तैयार करके दिखाया था, वह इस से बिल्कुल अलग है जो पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति पैदा करती है और पैदा करके औरत को बर्बाद और बाज़ार व आफ़िस और मार्केट में ज़लील करती है। उसके दायरेकार (कार्यक्षेत्र) की निशानदेही और उसकी ख़ास तस्वीर की पहली झलक इस आयत से स्पष्ट होती है ।

''अपने घरों में बैठो सम्मान के साथ और ज़माना-ए-जाहिलीयत की तरह सिंगार करके दिखाती न फिरो''

यह एक ही आयत उसके कार्य क्षेत्र को स्पष्ट रूप से निर्धारित कर देती है। यह आयत मानों कि उसकी ज़िन्दगी की व्याख्या और उसके कार्यक्षेत्र का शीर्षक है जिससे औरत और मर्द के सीमित कार्यो के दरम्यान एक लकीर खींच दी जाती है। दोनों अपने-अपने क्षेत्र में काम के मालिक और ज़िम्मेदार हैं। दोनों का आपस में कोई टकराव नहीं है बल्कि वह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों आपस में एक दूसरे की खिदमत अदा करते हैं और एक दूसरे का काम बटाते हैं। औरत उसके बच्चे पालती, उसका घर संभालती और उसके माल की हिफ़ाज़त करती है। मर्द उसके बच्चों के लिये रोज़ी का इन्तिज़ाम करता है। उसके भरण-पोषण का प्रबन्ध करता है। उसकी इज़्ज़त व सम्मान की हिफाज़त करता और उसके रहने के लिये घर का इन्तिज़ाम

करता है। मानों कि जीवन कार्य दो दायरों में बटा हुआ है। बाहरी मामलों का एक ज़िम्मेदार है। और दूसरे मामलों का दूसरा ज़िम्मेदार है । जो घरेलू मामलों का ज़िम्मेदार है उसके लिये घरेलू कार्यों को ही पसन्द क़रार दिया गया है। शर्म व हया का ज़ेवर और पर्दा उसका बेहतरीन लिबास बताया गया है। हद यह है कि उस पर मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ना भी फ़र्ज़ क़रार नहीं दिया गया है बल्कि मस्जिद के मुक़ाबले में घर की चार दीवारी के अन्दर नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है और घर में बरामदे के मुक़ाबले में अन्दर की कोठरी में पढ़ना ज़्यादा फज़ीलत रखता है। इबादत के फज़ीलत की यह तदरीज (Gradation) ख़ुद बताती है कि मालिक की मर्ज़ी क्या है और इस्लाम ख़ुदा की बन्दियों को किस तरह के सांचे में ढालना चाहता है। अगर वह मस्जिद जायें तो उनकी सफ़ें (पंक्तियाँ) मर्दों की पंक्तियों से अलैहदा होंगी। इमाम के भूल जाने पर उनके टोकने का तरीक़ा मर्दों से अलग होगा। वह मर्दों से पहले नमाज़ से फ़ारिग होकर रुखसत हो जायेंगी। वह बीच रास्ते में नहीं बल्कि दीवार के साथ लगकर चलेंगी। वह घरों से निकलेंगी तो चेहरों को अच्छी तरह से ढांप कर घूंघट डालकर निकलेंगी उनका लिबास ज़ाहिर न होगा और उनका ज़ेवर झुनझुनायेगा नहीं। वह तेज़ खुशबू लगाकर बाहर न जायेंगी और न मर्दों के दरम्यान से गुज़रेंगी और अगर ग़लती से या ढिठाई से वह ऐसा कर गुज़रें तो उनकी नमाज़ क़ुबूल न होगी और उन्हें दिल की पाकी के लिये तौबा व इस्तिग़फ़ार की ज़रूरत होगी। वह कभी बिना महरम (जिससे निकाह न हो सकता हो) के सफ़र न करेंगी। इसलिये कि बिना महरम सफ़र करने वाली औरत अपने आपको शैतान के चंगुल में फंसा देने के लिये खुला छोड़ देती है और हर हर्कत मर्दूद शैतान का शिकार हो जाती है। फिर उनके लिये ज़रूरी है कि वह नाम और दिखावा से पूरी तरह परहेज़ करे,

अपने आपको छुपाये। अपने ख़ूबसूरत लिबास, ज़ेवर, जिस्म, चेहरे हर चीज़ को ग़ैर महरम की नज़रों से सुरक्षित रखें। ग़ैर मर्दों से बात चीत से बचें और अगर ज़रूरत पेश आ ही जाये तो अपनी आवाज़ और लहजे में कुछ सख़्ती पैदा कर लें ताकि सामने वाले को किसी क़िस्म की लगावट का भ्रम भी न होने पाये और उसके दिल में शैतान को गुदगुदाने का मौक़ा न मिले। चलते-फिरते इतनी इहतियात करे कि ख़ूबसूरती नुमायां और ज़ाहिर न हो। ऐसे बारीक कपड़े पहनने से परहेज़ करे जिससे शरीर झलकता हो और जिसके पहनने से लिबास पहनने और जिस्म छुपाने का मक़सद ही पूरा न होता हो।

यह वह सारी हिदायतें हैं जो इस्लामी सोसाइटी के अन्दर औरत के लिये मौजूद हैं। यह मानो कि एक सांचा है जिसके अन्दर इस्लामी खातून का सीरत व किरदार (चरित्र) ढलता है और वह महज़ ''एक औरत'' से एक ''मोमिना'' बनती है। उसके लिये नबी करीम सल्ल० ने सतर की स्पष्ट सीमायें बता दी हैं। फ़रमाया ''किसी औरत के लिये जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो, यह जाइज़ नहीं कि वह अपना हाथ इससे ज़्यादा खोले'' यह कहकर हुज़ूर सल्ल० ने अपनी कलाई के आधे हिस्से पर हाथ रखा था। (अबू दाऊद)

नेक बीवी को हुज़ूर सल्ल० ने दुनिया की बहुत कीमती दौलत क़रार दिया है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया ''मैं तुम्हे बताऊं आदमी का बेहतरीन खज़ाना क्या है ? ''नेक बीवी'', फिर उसकी निशानियां बयान फ़रमाई- ''जब शौहर उसको देखे तो बीवी उसको खुश कर दे। जब वह किसी बात का हुक्म दे तो उसकी इताअत करे। जब वह बाहर जाये तो उसकी ग़ैर मौजूदगी में घर-बच्चों और इ़ज्जत व आबरू हर चीज़ की हिफ़ाज़त करे''

यानी एक मोमिना औरत के किरदार का बेहतरीन रूपरेखा इस्लामी सोसायटी में निर्धारित, मालूम और स्पष्ट है। वह बीवी की हैसीयत में सलीक़े वाली ख़ातून होती है जो अपने घर को दौलत से नहीं बल्कि अपने सलीक़ों से सजाती है और ईमान से माला माल करती है वह परेशानियों में सब्र करने वाली और अपने शौहर का साथ देने वाली जीवन साथी होती है और सम्पन्नता में दिखावा और घमण्ड से बच कर वह शुक्र बजा लाने वाली होती है। शौहर के लिए अपनी बीवी को निवाला खिलाना तक इबादत क़रार दिया गया और यह उसके सब्र व शुक्र और इस्लामी किरदार का बदला है। एक मोमिन बीवी की हैसीयत से जहां उसकी ज़िम्मेदारियां अनगिनत हैं, उसका मुक़ाम भी बहुत बुलन्द है। वह बेटी की हैसीयत से एक इताअत गुज़ार (आज्ञाकारी) बेटी होती है, जो अपने माँ-बाप से मुहब्बत करती और अपने बहन, भाईयों से मुहब्बत करती है। अपनी माँ का काम-काज में हाथ बटाती और अपने बाप की इज़्ज़त को बचाकर रखती है। अल्लाह के नज़दीक ऐसी बेटी का इतना बड़ा दर्जा है कि इस जैसी दो लड़कियों को पाल-पोस कर बड़ा करना और शादी करके इज़्ज़त के साथ उनके शौहर के घर पहुंचा देना इतना बड़ा सवाब का काम है कि हुज़ूर सल्ल० ने ऐसे शख़्स के लिये जन्नत की खुशख़बरी दी है । मां की हैसीयत से उसकी मुहब्बत औलाद के लिये सबसे बड़ी नेमत होती है। वह रातों को जाग-जाग कर और बोझ उठा-उठा कर औलाद को पालती और उनकी देख-रेख सब्र व सुकून के साथ बिला किसी मुआवज़ा (परिश्रमिक) करती है। ख़ुद गीली जगह सोती और बच्चों को सूखी जगह सुलाती है। अपने जिस्म का ख़ून निचोड़-निचोड़ कर दूध की शक्ल में उनके जिस्म में उन्डेलती है। उनके लिये भूख-प्यास और तकलीफ़ बर्दाश्त

करती है और यह सब कुछ बिला पैसा की ख़िदमत है जो वह अन्जाम देती है। ऐसी नेक और मोमिना मां की ख़िदमत का हुजूर सल्ल० ने बार-बार हुक्म फरमाया है और उसके पैर के नीचे जन्नत क़रार दी है। उसका रिश्ता पक्का, मज़बूत और मौत के सिवा उसे कोई तोड़ नहीं सकता बल्कि उसके साथ रिश्ता दुनिया ही में नहीं बल्कि आख़िरत तक निभता है।

क़ुरआन में मुसलमान औरत की तस्वीर

अल्लाह तआला ने नेक और मोमिना ख़ातून की बड़ी तफ़सील से तस्वीर क़ुरआन पाक की सूरह ''अहज़ाब'' में बयान की है। एक ख़ातून क़ुरआन के बताये हुये उन सिफ़तों और खूबियों को अगर अपनी ज़िन्दगी में उतार ले तो एक ऐसी शख्सीयत वजूद में आती है जो अल्लाह तआला को मोमिन औरत की हैसीयत से दुनिया में मतलूब है। क़ुरआन में उनकी निम्न विशेषताएँ बयान की गयी हैं।

मुस्लिमात- वह ख़ुदा की आज्ञा पालन करने वाली और उसके गुस्से और प्रकोप से बचने की कोशिश करने वाली होती हैं।

मोमिनात- वह अल्लाह, उसके रसूल सल्ल० और आख़िरत पर ईमान लाने वाली और अपने आमाल में उस ईमान पर कायम रहने वाली होती हैं।

क़ानितात- वह अपनी ज़िन्दगी के सारे मामलों में ख़ुदा की तरफ़ झुकने वाली, उससे अपनी मुरादें मांगने वाली और उस पर भरोसा करने वाली होती हैं।

सादिक़ात- वह साफ़-सुथरी बात करने वाली, नेक और सच्ची होती हैं। झूठ से अपना दामन बचाने वाली होती हैं।

साबिरात- वह मुसीबत और परेशानी में राहे हक़ पर जमी रहने वाली और मालिक की मर्ज़ी पर मुसीबतें बर्दाश्त करने वाली होती हैं।

खाशिआत- वह ख़ुदा के सामने समर्पण करने वाली उसके आदेशों के अधीन और उसकी मर्ज़ी की पाबन्द होती हैं।

मुसद्दिक़ात- वह अपने माल में से ग़रीबों का हिस्सा निकालने वाली, रिश्तेदारों और सगे सम्बन्धियों के अधिकारों को अदा करने वाली और सदक़ा-खैरात का एहतिमाम करने वाली होती हैं।

साईमात- वह रोज़ा रखने वाली और अल्लाह के एहकाम की पाबन्दी करने वाली होती हैं।

हाफ़िज़ात- वह अपनी इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करने वाली, शर्म व हया वाली और पाकदामन होती हैं।

ज़ाकिरात- वह हमेशा अल्लाह को याद करने वाली, उसी से लौ लगाने वाली और उसी पर भरोसा करने वाली होती हैं।

मुहसिनात- वह नेक, परहेज़गार, पाकदामन और मासूम होती हैं, उन्हें छल-कपट नहीं आता, उन्हें धोखा और मक्कारी नहीं आती । वह भोली-भाली साफ दिल और नेक तबीअत होती हैं।

इसके अलावा मुसलमान औरत अपने शौहर की वफ़ादार, अमानतदार और खिदमत गुज़ार होती है, वह उसके राज़ों और रहस्यों को छुपाने वाली, उनकी हिफ़ाज़त करने वाली, और उसकी कमियों को छुपाने वाली होती हैं। इसी तरह सूरह निसा, सूरह तहरीम और सूरह नूर में उसकी सिफ़त बयान हुई हैं। यानी क़ुरआन पाक में इस्लामी समाज के लिये मुसलमान औरतों का नक़्शा इतने अच्छे ढंग से और स्पष्ट रूप से पेश कर दिया गया है

कि इसमें किसी सन्देह की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रह गयी है।

कुरआन में औरत के दो मिसाली क़िरदार

मुसलमान औरत की मतलूबा (आपेक्षित) सिफ़तें बयान करने के साथ-साथ कुरआन ने दो मिसाली किरदार (Ideal Character) भी पेश किये हैं।

एक फ़िरऔन की बीवी, हज़रत आसिया अलै० का किरदार है। दूसरा हज़रत ईसा अलै० की वालिदा मुहतरमा हज़रत मरियम अलै० का किरदार है। एक औरत अपने वक़्त के ज़ालिम व जाबिर, अत्याचारी, अन्यायी और अहंकारी राजा के महल में है, जुल्म व अत्याचार और गुरूर व घमण्ड की पैरवी के लिये तो उसके पास अनगिनत सामान, साधन और मकानात हैं बल्कि हर प्रकार की सुख-सामग्री मौजूद है। हर प्रकार के अवसर उसे हासिल हैं। दूसरी तरफ़ अल्लाह से तअल्लुक जोड़ने, उसकी कुरबत (सामीप्य) हासिल करने, उसी का कलिमा दिल में उतारने और उसी की बन्दी बनकर रहने का वहां कोई मौक़ा नहीं है। एक ज़ालिम और अत्याचारी व्यक्ति अपनी खुदाई का डंका बजा रहा है और उसी के महल में उसी के हुक्म के आधीन रहते हुये एक औरत इस्लाम क़ुबूल करती, इसका इज़हार करती, उसके लिए मुश्किलें हैं और मुसीबते हैं वह बर्दाश्त करती और उस पर उम्र भर क़ायम रहती है। बादशाह उसकी जान छीन सकता है लेकिन किसी बड़े से बड़े जुल्म व अत्याचार की मदद से भी उसका ईमान नहीं छीन सकता। उसका ईमान बादशाह के सारे लाव- लश्कर से ज़्यादा मज़बूत और ताक़तवर है, न उसको ताक़त की परवाह है न रूपये की, न हुकूमत की, न महल की, न ऐश व आराम की और न जुल्म व अन्याय की। उसे सिर्फ अपने मालिक, आक़ा और

ख़ालिक की परवाह है। चुनांचे वह सिर्फ उसी की बन्दी है और उसके बाग़ियों के महलों में महबूब और प्रिय रह कर भी उन सबसे बाग़ी है। बेहतरीन शौहर भी उसकी आक़िबत और आख़िरत को बिगाड़ नहीं सकता। वह दुनिया में ही अपनी जन्नत का महल देख लेती है।

दूसरी औरत हज़रत मरियम अलै० एक ज़ालिम, अत्याचारी, नाफ़रमान क़ौम के दरम्यान रहती है जो अपनी ही बहू-बेटियों पर हाथ उठाती और उनकी इज्ज़त व पाकदामिनी को संदिग्ध क़रार देती है। ऐसे माहौल में और वह अपनी इज़्ज़त व सम्मान की हिफाज़त करती और हक़ के रास्ते पर चलती है। वह न उनके इल्ज़ामों की परवाह नहीं करती, न उनके तानों पर ध्यान देती और न उन की सख्तियों के आगे झुकती है। वह ख़ामोशी, सब्र और अज़ीमत से सिर्फ़ अपने मालिक के सामने ही झुकी रहती है। उसी से हिफ़ाज़त, मदद और रहम की तलबगार है और आख़िरकार एक महान नबी की परवरिश करती है।

क़ुरआन में औरत के दो बुरे किरदार :-

क़ुरआन ने इसी तरह औरत के दो बुरे और ख़राब किरदारों का भी उल्लेख किया है, जिनसे मुसलमान औरत को बचाना और सुरक्षित रखना आपेक्षित है। एक हज़रत नूह अलै० की बीवी है और दूसरी हज़रत लूत अलै० की बीवी है। इन दोनों को अपने वक़्त के बेहतरीन इन्सान अपने घर के अन्दर ही हासिल होती हैं। उनकी पाक़ीज़ा और पवित्र शिक्षाओं से रातो दिन दूसरे लोग फ़ायदा उठाते और अपने एख़लाक़ व आमाल सुधारते हैं। वह उनका बेहतरीन किरदार और अख़लाक़ अपनी आंखों से देखती हैं, और उसकी असर अंगेज़ी को मानती हैं और उनके पवित्र इच्छाओं को सुनती हैं।

लेकिन उनके दिलों पर ऐसी मुहर लगी है और वह ऐसी बदकिस्मत, सख़्त दिल और कम समझ हैं कि उनसे फ़ायदा नहीं उठा सकती, वह रातो- दिन देखती हैं कि दूसरों के अख़लाक़ उनके शौहरों की शिक्षाओं से सुधर जाते हैं लेकिन मालूम होता है कि जैसे उनकी आंखों में रोशनी नहीं है, उनके कानों में सुनने की ताक़त नहीं है, उनके अक़्ल नहीं है और वह बिल्कुल भेड़-बकरी की सी कैफ़ीयत से उस माहौल में रहती हैं बल्कि उससे भी बढ़कर वह ज़ालिमों और ख़ुदा के बाग़ियों का साथ देती हैं। वह शौहर के वफ़ादारी का हक़ अदा नहीं करतीं, वह हक़ से मुंह मोड़ती हैं। नतीजा यह है कि अपने वक्त के बेहतरीन शौहरों की बीवियां होने के बावजूद अज़ाब की भागीदार क़रार दी जाती हैं।

क़ुरआन के अन्दर औरत के दो अच्छे और दो बुरे क़िरदार नमूने बताते है कि किस तरह ख़ुदा की ख़ुशनूदी अकेली अपनी कोशिश और ईमान से ही हासिल हो सकती है। किसी के लिये यह घमण्ड और बड़ाई बल्कि माफ़ी की ज़मानत नहीं है कि वह किसी बड़े नेक इन्सान की बीवी है और न किसी के लिये यह लाज़मी सज़ा की बात है कि वह किसी बुरे इन्सान के साथ है। अस्ल चीज़ उसके अपने आमाल व किरदार और अखलाक़ हैं जिनके तराज़ू में उसे दुनियां और आख़िरत दोनों जगह तौला जाना है। इसी लिये हुज़ूर सल्ल० ने अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ि० और अपनी फूफी हज़रत सफ़िया रज़ि० को मुखातिब करके फ़रमा दिया था कि अपनी-अपनी आख़िरत की फ़िक्र कर लें। यह न समझ बैठें कि वह नबी की बेटी और फूफी हैं। आख़िरत की जबावदेही से अपने व्यक्तिगत आमाल के सिवा कोई चीज़ बचाने वाली नहीं है अलबत्ता मर्द और औरत दोनों आपस में एक दूसरे पर असर

लाने के लिये, उसकी मेम्बर बनने के डालते हैं।

''वह तुम्हारे लिये लिबास हैं और तुम उनके लिये लिबास हो'' और नेकी अगर पुख्ता, सुलझी हुई और गहरी जड़े रखती हो तो ज़रूर असर डालती है और औरत के लिये तो असर अन्दाज़ होने के मौक़े मर्द से कहीं ज़्यादा होते हैं। इसलिये वह घर के माहौल पर असर डाल सकती है जिस किस्म का माहौल घर में वह बनायेगी वही माहौल घर के लोगों पर असर डालेगा और उनके प्रतिदिन के कार्यों को प्रभावित करके रहेगा। वैसे भी घरों में होने वाली नेकी की बातों को फैलाने का उन्हें हुक्म दिया गया है ''तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें और हिकमत की जो बातें हुई हैं उनका चर्चा करो''

मुसलमान औरतों की मिसाली अज़ीमत :

मुसलमानों के ज़्यादातर समाज इस हालात से ग्रस्त हैं और इस समाज में मुसलमान औरतें भी इन्हीं हालात का शिकार हैं। अब औरतें इन हालात की खराबी का एहसास रखती हैं और उनकी इस्लाह और सुधार का जज़्बा और ख़्वाहिश रखती हैं, उनके सामने कामों का एक पहाड़ मौजूद है। वह अपनी दुनिया और आख़िरत दोनों की बेहतरी इसी में समझती हैं कि खुदा की राह में काम करें। उनके लिये यह अनोखा काम नहीं है। उनसे पहले भी इस्लाम की खिदमत में अल्लाह की बन्दियों ने वह कारनामें अन्जाम दिये है। जो औरतों की तारीख का सुनहरा हिस्सा और आख़िरत में उनकी बेहतरीन पूंजी है। नबी अकरम सल्ल० ने ग़ारे हिरा से वापस आकर बेचैनी की हालत में कांपते हुये अपना वाक़िया बयान फ़रमाया था।

''खदीजा रज़ि० मुझे अपनी जान का खतरा है'' यह बात नबी अकरम सल्ल० ने फरमाई थी उन्हें अपने बारे में बड़ी फ़िक्र थी। लेकिन

हज़रत खदीजा रज़ि० ने कहा, नहीं आप सल्ल० को डर किस बात का है। मैं देखती हूँ आप सल्ल० रिश्तेदारों पर एहसान फ़रमाते हैं, सच बोलते, बेवाओं, यतीमों की मदद करते, मेहमानों का ख्याल करते और मुसीबतों के मारों से हमदर्दी फ़रमाते हैं। ख़ुदा आप सल्ल० को कभी मिटायेगा नही" उम्मत की मां ने यह हौसले की बात कही थी।

यह वह आवाज़ थी जिसने नुबूअत का अज़ीम बोझ पड़ने पर हुज़ूर सल्ल० की हिम्मत बढ़ाई थी, उन्हें तसल्ली दी, इत्मीनान दिलाया और परवरदिगार की मदद याद दिलाकर उन्हें सबसे बड़ी क़ूव्वत का सहारा दिया, यह हम सब मुसलमानों की मुहतरम मां हज़रत ख़दीजा रज़ि० थीं। अल्लाह तआला जन्नत में उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाये। उनका यह एहसान कि उन्होंने दुनिया के बेमिसाल और महान शख़्सियत को दुनियां का सबसे बड़ा काम अन्जाम देने में मदद की। उनकी मदद की, उनकी हिम्मत बंधाई। उनका साथ दिया और अपना सब कुछ दीन के रास्ते में लुटा दिया। जिन्होंने समस्त मानवजाति में आख़िरी हक़ की दावत देने वाले को तसल्ली दी। यह उनका उम्मते मुस्लिमा, हम मुसलमानों पर बल्कि कियामत तक पैदा होने वाले सारे इन्सानों पर वह एहसान है जो कभी उतारा नहीं जा सकता। यह सौभाग्य एक औरत को ही हासिल हुआ। हम, हमारे बाप-दादा, हमारी नस्लें भी उनके एहसान के बोझ से दबे हुये जायेंगे और कभी इस एहसान का हक अदा न कर सकेंगे। फिर जब तबलीग़ का फ़रीज़ा (ज़िम्मेदारी) अदा किया जाने लगा तो हज़रत खदीजा रज़ि० एक ख़ातून ही थीं जो सबसे पहले नबी सल्ल० पर ईमान लाईं। नई तहरीक जो उठ रही थी, नया दीन जो बरपा हो रहा था। नया तसव्वुरे ज़िन्दगी जो उभर रहा था, उसकी हिफ़ाजत के लिए उस पर ईमान

लिये अपना सब कुछ लुटाने के लिये, सबसे पहले आगे बढ़ने का गौरव एक खातून को ही हासिल हुआ। फिर जैसे-जैसे इस्लाम की दावत फैलती गयी वह अपनी ज़ायदाद, अपनी सलाहीयत (योग्यता), अपनी क़ूव्वत व हिम्मत और अपना असर, तअल्लुक़, उसे फैलाने के लिये और पैग़म्बरे-इस्लाम के लिये सुकून और इत्मिनान का माहौल बनाने के लिये सर्फ करती चली गयीं। यहां तक कि उनकी वफ़ात (निधन) के बाद भी हुज़ूर सल्ल० उनको बहुत याद फ़रमाया करते थे।

जैसे-जैसे दावत फैली। मर्दों के साथ औरतों ने भी बढ़ चढ़ कर उसमें हिस्सा लिया। इस्लाम में सबसे पहली शहादत भी एक औरत ने पेश की। अबू जेहल ने भाले से हज़रत सुमय्या रज़ि० को सबसे पहले अल्लाह की राह में शहीद किया। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० जैसे इन्सान को इस्लाम के दायरे में दाखिले का सौभाग्य भी एक औरत को ही हासिल हुआ। जिन्होंने ख़ून से लथपथ होने और इस्लाम के लिये सख़्त यात्नायें झेलने के बावजूद बुलन्द आवाज़ से साफ-साफ कह दिया था कि उमर रज़ि० जो चाहे करो इस्लाम अब दिल से निकल नहीं सकता। यही वह ऐतिहासिक वाक्य है जिसने हज़रत उमर रज़ि० के सामने से अंधकार के बादल चीर कर सच्चाई के सूरज को ज़ाहिर और रोशन कर दिया था।

फिर वह भी एक औरत ही थीं। इस्मा बिन्त अबू बक्र रज़ि० जिन्होंने बड़ी हिम्मत और बहादुरी के साथ तीन दिन तक सौर नामी गुफ़ा में हुज़ूर सल्ल० तक खाना पहुंचाया जबकि क़ुरैश भूखे भेड़ियों की तरह आप सल्ल० की जान के प्यासे थे और क़ीमती ऊँटों को इनाम के रूप में हासिल करने के लालच में जंगलों और रेगिस्तानों में ढूंढते रहे। जिन्होंने अबू जेहल जैसे बदमिजाज़ आदमी की पूछगच्द पर साफ जवाब दे दिया और एक सख्त तमाचा

बर्दाश्त किया था। फिर वह भी एक औरत ही थीं जिन्होंने उहद की जंग में बहुत बड़ी खिदमत अन्जाम दीं। ज़ख्मी लोगों को पानी पिलाती थीं और ख़तरनाक हालात में भी परेशानियों का मुक़ाबला डट कर करती थीं। उन्होंने अपने भाइयों और शौहरों की कटी हुई लाशें देखीं, लेकिन ज़बान से उफ़ तक न की। वह सिर्फ नबी करीम सल्ल० की खैरियत जानना चाहती थीं। मुस्लिम समाज का ज़्यादातर हिस्सा औरतों की बदौलत तैयार हुआ। उन्होंने कई-कई हज़ार हदीसों की रिवायत की और अपने इल्म की ताक़त से दीने इस्लाम की बहुत बड़ी ख़िदमत अन्जाम दीं।

हमारी मुहतरम माओं और बहनों की यह रौशन कहानी है जो इतिहास के पन्नों पर अंकित है। जिसकी मौजूदगी इस बात की ज़मानत देती है कि मुसलमान ख़ातून अपनी आख़िरत बनाने में मर्दों से भी पीछे नहीं रहीं। न उसने कभी मर्दों का ज़मीमा (परिशिष्ट) बन कर अपना दीन उनके हवाले किया। न उन्होंने कभी उस बात को काफ़ी समझा है कि जो तरीक़ा सोसाइटी का हो, वही तरीक़ा हमारा भी हो बल्कि उन्होंने समझ और शऊर हासिल किया और फिर अपने शुऊर के मुताबिक अपने मकसदे ज़िन्दगी के लिये महान कुर्बानियां पेश कीं।

औरतों का बुलन्द मुक़ाम :

हक़ीक़त यह है कि समाज सुधार के काम में समझदार और दीनदार औरतें बहुत अच्छी तरह अपना हिस्सा अदा कर सकती हैं बल्कि समाज में पैदा होने वाले ग़लत रस्म व रिवाज तो ऐसे होते हैं जिन्हें औरतें पहले क़दम पर ही अपनी व्यक्तिगत कोशिशों से घरों के अन्दर रोकने का सबसे ज़्यादा और प्रभावपूर्ण काम कर सकती हैं। शौहरों के लिये शारीरिक और मानसिक

सुकून के साथ रूहानी और आत्मिक सुकून का भी ज़रीआ बन सकती हैं जिससे कोई मर्द भी बेनियाज़ (निस्पृह) नहीं हो सकता। औलादों को दीनदारी का सबसे पहला पाठ अपने क़ौल व अमल से देकर उनमें दीन की बुनियादें मज़बूत कर सकती हैं। घरों में क़िनाअत, भरोसा, सुकून, अमन व शान्ति का माहौल पैदा करके मर्दों के कार्य-क्षमता को बढ़ा सकती हैं। कम आमदनियों में अपने सलीक़ा और मेहनत से इज़्ज़त व आबरू और खुद्दारी (स्वाभिमान) से रहने का सामान मुहय्या (एकत्र) कर सकती हैं। अपनी मदद, संगत व साथ और हिम्मत बढ़ाकर के मर्दों को दीनी और दुनयवी तरक़्क़ी के दरवाज़े तक पहुंचा सकती हैं। अपने किरदार की ताक़त से अपने दोस्तों, रिश्तेदारों में अपना उमदा नमूना देकर कितने ही घरों में इस्लाह की बुनियाद रख सकती है, दीनी इज्तिमाओं में अपने अख़लाक़ की उमदगी, शाइस्तगी, सुशीलता और शालीनता, अदब व सम्मान से कितने ही दिलों में दीनदारी का शौक पैदा कर सकती है। दोस्तों के साथ नेक बर्ताव के ज़रीये दोस्तों की पारम्परिक टकराव को ख़त्म करके अपने आस-पास एक हमदर्द, सभ्य और दीनदार माहौल बना सकती है और दीन के लिये त्याग और क़ुर्बानी का व्यवहारिक प्रदर्शन करके उन मुजाहिदों में शामिल हो सकती हैं जिनके लिये हुज़ूर सल्ल० ने उनके घरों को ही मैदाने जिहाद क़रार दिया है और हक़ीक़त यह है कि ऐसी ही वह मायें होती हैं जिनकी खुशी और ख़िदमत को बापों के मआमले में भी तीन बार फ़ज़ीलत और प्रधानता का दर्जा दिया गया है और ऐसी ही माओं के क़दमों तले जन्नत होती है। एक मुसलमान ख़ातून के लिये यह एक क़ाबिले फ़ख़्र और बुलन्द मुक़ाम है जो दीन ने उसे दिया है। लेकिन ज़ाहिर है

कि बुलन्द मुक़ाम को हासिल करने के लिये लगातार जिद्दोजेहद (संघर्ष), निरंतर मेहनत व लगन न्याय, इन्साफ, क़ुर्बानी और नफ़्सकुशी वह शर्तें हैं जो कभी नज़र अंदाज़ नहीं की जा सकतीं।

तर्बियत में अमली नमूना :

बच्चों के सामने अमली मिसाल से बढ़कर तर्बियत का कोई उमदा ज़रीया नहीं है। इसलिये कि अमल ही अल्फ़ाज़ में असर और नसीहत में क़ुबूलीयत का जज़्बा पैदा करता है। इस हिकमत के पेशेनज़र एक मशहूर बुज़ुर्ग ने एक बच्चे को उस वक़्त तक नसीहत न की और जब तक खुद भी अमली तौर पर उस नसीहत पर अमल न कर लिया था।

बच्चों के साथ इससे बड़ा ज़ुल्म और कोई नहीं है कि उनको ऐसी बातों की नसीहत की जाये जिन पर मां-बाप खुद अमल न करते हों। इससे न सिर्फ़ बच्चों पर ऐसी नसीहत का कोई असर होता है बल्कि उनके एख़लाक़ में निफ़ाक़ (पाखण्ड एवं कपट) का बीज पलने लगता है और वह उभर कर अपने क़ौल और कथन के खिलाफ़ अमल करते रहते हैं और उन्हीं इस बुराई की खबर तक नहीं होती। यही वह चीज़ है जिसने क़ुरआन व हदीस की मौजूदगी और हुज़ूर सल्ल० और सहाबा रज़ि० की चमकती हुई ज़िन्दगियों के मुकम्मल रिकार्ड के बावजूद मुसलमानों के बेअमली और निफ़ाक़ की बीमारी आम कर दिया है।

सहाबीयात रज़ि० का तरीक़ा भी यही था कि वह बच्चों में अपने अमल से दीन की तालीम उतारती थीं। बच्चों को अपने घरों में दीने हक़ सिर्फ़ किताबों में ही नहीं बल्कि ज़िन्दगी में भी इन्सानों की सूरत में चलता फिरता

नज़र आता था। मगर उसके खिलाफ़ अमल करना या सोचना बच्चों के लिये मुश्किल होता था। सहाबीयात रज़ि० अपने बच्चों को हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में लातीं और उनके लिये दुआयें कराती और उनके अच्छे-अच्छे नाम रखती। उनको दीन की तालीम देतीं उनके अन्दर सच्चाई पर कुर्बान होने का जज़्बा उभारती। खुद हुज़ूर सल्ल० की महफ़िलों में जाकर दीन की तालीम हासिल करतीं। सवालों के ज़रीये अपनी ज़ेहनी उलझनों को दूर करतीं। अपने इज्तिमाओं के लिये हुज़ूर सल्ल० से खास वक्त चाहतीं और दीन सीखने के लिये पूरी सक्रियता और शौक़ दिखातीं। आज हमारे पास खानदानी और समाजी ज़िन्दगी का एक मज़बूत जामेअ और बेहतरीन निज़ाम मौजूद है। उसकी तर्बियत में उन मुहतरम औरतों का भरपूर हिस्सा है जिन्होंने खानदानी ज़िन्दगी के बारे में तरह-तरह के सवालात पूछ-पूछ कर और हुज़ूर सल्ल० से एहकाम हासिल करके दीन के इस पहलू की तामीर और व्याख्या में अपना बेहतरीन हिस्सा अदा किया।

मर्दों की इस्लाह और औरतें :

औरतों के ज़िम्मे मर्दों का यह उमूमी (सामान्य) हक़ है कि वह उन्हें घरों में सुकून मुहय्या करें और जो मर्द दीन की कामयाबी में संघर्ष कर रहे हों। उनका काम दुगना, मेहनत दोगुनी और नतीजे में तकलीफ़ भी दोगुनी हो जाती हैं। उनके लिये तो खास तौर पर घरों में राहत व सुकून की फिज़ा पैदा करें। जो मर्द ज़िन्दगी की आर्थिक दौड़ और दूसरी ज़िम्मेदारियों के साथ-साथ इकामते दीन के लिये भी जेद्दोजेहद कर रहें हैं। उनकी मुश्किलें भी बेहद व हिसाब होती है। उन्हें जीवन संघर्ष के दौरान जिन विभिन्न मैदानों पर लड़ना पड़ता है वह इस बात का तकाज़ा करते हैं कि उनकी शारीरिक और मानसिक

शक्ति को बहाल करने के लिये घरों का पुर सुकून माहौल, मदद और सहारे की फ़िज़ा मौजूद हो, इस फ़िज़ा को बनाना जिहाद में सम्मिलित सिपाही को पीछे से सामान वग़ैरह पहुंचाने के बराबर है जिसका अज्र व सवाब अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा है और यह सुकून और माहोल दीनदार, परहेज़गार और नेक औरतें ही पैदा कर सकती हैं, नाफ़रमान औरतें तो उल्टा अपनी दूसरी मांगे पेश करके पैर की ज़न्जीर बनने की कोशिश करती हैं ताकि उनके मर्द अपना सारा ध्यान सिर्फ़ उनकी दुनयवी ज़रूरतों पर ही केन्द्रित कर दें हालांकि दीनदार मर्दों की दीनी कोशिशें ही दरअस्ल औरतों को मदद और सहारा का मौक़ा फराहम करती हैं जिसके नतीज़े में वह आख़िरत में अल्लाह को खुश करके कामयाब व सफल हो सकती हैं। यही वह चीज है कि जब औरतों ने हुजूर सल्ल० से पूछा था कि या रसूलुल्लाह सल्ल० मर्द तो अल्लाह की राह में जिहाद करके आख़िरत के बड़े-बड़े दर्जे हासिल कर लेते हैं और हम घरों में उनके बच्चे पालती रहती हैं और जिहाद और शहादत जैसी बड़ी नेकी से वंचित रहती हैं, तो हुजूर सल्ल० ने उन्हें इत्मीनान दिलाया था कि तुम्हारा जिहाद तुम्हारे घरों में है। बिलाशुब्हा घर की छोटी सी रियासत के तमाम विभागों को चलाना, उसकी आमदनी और ख़र्च को संतुलित रखना, नई नस्ल की पैदाइश, परवरिश व तरबीयत करके उसे क़ौम के हवाले करना और उसमें उनके दीन में बुनियादी शिक्षाओं को उनके अन्दर उतारना, ज़िन्दगी की जद्दोजेहद में मर्दों की मदद करना और उनके दुख-सुख में शरीक होकर उनकी ढारस बंधाना और उन्हें अपना और अपने घर वालों का बोझ कम से कम महसूस होने देना और तसल्ली देकर कशमकश के लिये ताज़ा दम कर देना यह कोई मामूली काम नहीं है दुनिया की इस अंधकारयुक्त दौड़ में

हलाल तरीकों की थोड़ी कमाई पर संतुष्ट रहना, सादा ज़िन्दगी को बिला किसी एहसास कमतरी (हीन भावना) के इख़्तियार करना। दीनदारी में अपने से बेहतर की तरफ़ और दुनियादारी में अपने से कमतर की तरफ देखकर झूठे मेआरे ज़िन्दगी, खोखली इज्ज़त और दुनयवी ठाठ-बाट पर न रीझना, हलाल रिज़्क हासिल करने की जान लेवा कश्मकश के अन्दर शौहर की जान तोड़ कोशिश में उसे सहारा देना और हलाल की कमतर कमाई पर अपने इत्मीनान का व्यावहारिक प्रदर्शन करके अपने शौहर को इत्मीनान दिलाना। यह वह ज़रूरी सिफ़तें हैं जिनकी मदद से मर्दों की हिम्मत बढ़ती है। और हौसले बुलन्द हो जाते हैं और उनके सुस्त पड़े हुये क़दम भी और तेज़ हो जाते हैं और यही वह तरीक़ा है जिसके सबब असत्य के ख़िलाफ़ हक़ के जिहाद में औरतों का ज़्यादा हिस्सा रखा गया है।